ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-4* Issue-4* May- 2019
Innovation The Research Concept

शोध–पत्र लेखन का प्रारूप

मंजुलता कश्यप
सहायक प्राध्यापक
अर्थशास्त्र विभाग
ठाकुर छेदीलाल शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जांजगीर (छ.ग.)
रामसेवक राम भगत
सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
शासकीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय
सीतापुर (छ.ग.)

सारांश

रेडमैन और मोरी ने अपनी किताब – ''दि रोमांस ऑफ रिसर्च'' में शोध का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है कि नवीन ज्ञान की प्राप्ति के व्यवस्थित प्रयत्न को हम शोध कहते है। शोध से व्यवहारिक समस्याआ का समाधान होता है। शोध से व्यक्तित्व का बौद्धिक विकास होता है। शोध सामाजिक विकास में सहायक होता है। शोध जिज्ञासा की मूल प्रवृत्ति को संतुष्ट करता है। शोध अनेक नवीन कार्य विधियों व उत्पादों को विकसित करता है। शोध पूर्वाग्रहों के निदान आर निवारण में सहायक होता है।

शोध की शुरूआत में 1, 2 स्त्रोतों पर निर्भर न रहे, कम से कम 5 स्त्रोतों के प्रयोग की कोशिश करे। पुस्तकालय जाएं, ऑनलाईन खोज कीजिए, एकेडमिक डेटाबेस का प्रयोग कीजिए। अपने शोध में रचनात्मक हो जाए। अपने नोट्स को सुनियोजित करे। अपने शोध पत्र के लक्ष्य की पहचान कीजिए। अपने मुख्य बिन्दुओं को निर्धारित कर दे।

अपने आप से महत्वपूर्ण प्रश्न कीजिए कि क्या इस विषय पर पर्याप्त शोध मौजूद है? क्या यह विषय पर्याप्त नया या अद्वितीय है? कुछ ऐसा विषय चुनिए जो आपकी

पसंद हो। मौलिक बने रहिए, सलाह लीजिए। यदि किसी कारणवश आप यह पाते है कि विषय का चयन ठीक निर्णय नहीं था तो अपनी विषयवस्तु को बदलने से डरें नहीं।

किसी भी आर्थिक समस्या का अनुसंधान हेतु चयन करना वास्तव में कठिन कार्य है। जब तक यह समस्या प्रस्तावित अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति करने हेतु उपयुक्त न हो, अनुसंधानकर्ता का समस्त परिश्रम निरर्थक ही रहेगा। इसलिए यह चयन सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। इस हेतु प्रमुख रूप से निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना चाहिए –

समस्या का चयन

किसी आर्थिक अनुसंधान के आयोजन हेतु अध्ययन समस्या का चुनाव ही सर्वप्रथम महत्वपूर्ण चरण होता है। यदि अध्ययन विषय ही उपयुक्त नही होगा तो उसके अंतर्गत किया गया सर्वेक्षण भी संतोषजनक नही होगा। इसके लिए निम्नलिखित तत्वों पर ध्यान देना चाहिए।

रूचि के अनुकूल

सरल तथा कठिन कैसी भी समस्या हो, उसे अध्ययनकर्ता की रूचि के अनुकूल होना चाहिए जिससे वह लगन तथा परिश्रम के साथ गहन अध्ययन का कार्य कर सके।

विशय का पूर्व ज्ञान हो

उसे इस क्षेत्र में जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा, उत्सुकता तथा कुछ न कुछ पूर्व ज्ञान भी अवश्य होना चाहिए।

समस्या का परिस्थितियों से संबंध

समस्या का देश की तात्कालिक अथवा सामाजिक परिस्थितियों, आर्थिक ढांचे, वर्तमान परिस्थितियों, प्रचलित आर्थिक नीतियों आदि से घनिष्ठ संबंध होना चाहिए।

नया विशय न हो

यथा संभव नवीन अथवा असम्बद्ध विषय को अनुसंधान प्रणाली द्वारा अध्ययन हेतु नहीं चुना जाना चाहिए।

समस्या का आकार

समस्या का ऐसा आकार होना चाहिए कि उसे उपलब्ध साधन सीमा के भीतर ही अध्ययन किया जा सके।

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

विषय का चुनाव कर लेने के पश्चात् यह आवश्यक है कि हम उस विषय से सम्बद्ध अन्य शोध पुस्तकों का अध्ययन करें, ऐसा करने पर श्रीमती यंग के अनुसार – अध्ययन विषय के संबंध में एक अंतर्दृष्टि तथा सामान्य ज्ञान प्राप्त करने, शोध कार्य में उपयोगी सिद्ध होने वाली पद्धतियों के प्रयोग के संबंध में, उपकल्पना के निर्माण में, एक ही शोध कार्य को फिर से दोहराने की गलती से बचने तथा विषय से सम्बद्ध उन पक्षों पर जिन पर कि दूसरे शोधकर्ताओं ने ध्यान नहीं दिया है, ध्यान देने के विषय में हमे सहायता मिल सकती है।

समस्या की प्रकृति

समस्या की प्रकृति सामान्य अथवा विशिष्ट हो सकती है। उसका दिन–प्रतिदिन सामाजिक घटनाओं अथवा विशेष प्रकृति की जानकारी से संबंध हो सकता है। प्रकृति के दृष्टिकोण से समस्या निर्धारण में उसके अध्ययन की उपयोगिता तथा आवश्यकता की तीव्रता पर भी पर्याप्त ध्यान देना चाहिए।

उद्देश्य का निर्धारण

उद्देश्य पर ही अध्ययन पद्धति, उपकरण, अनुसंधान स्वरूप तथा सूचना संकलन के स्त्रोत आदि भी निर्भर होते है। समस्याओं की सामान्य अथवा विशिष्ट प्रकृति पर ही सामाजिक अनुसंधान के सामान्य अथवा विशिष्ट उद्देश्य भी आधारित होते हे।

अध्ययन क्षेत्र का निर्धारण

अनुसंधान हेतु समस्या के विभिन्न पक्षो को यथासंभव स्पष्ट रूप से परिसीमित भी कर लेना आवश्यक होता है। स्थान की दूरी, जनसंख्या, प्राप्त सुविधाएं तथा भौगोलिक जानकारी आदि पर विशेष ध्यान देना पड़ेगा। उपयुक्त अध्ययन क्षेत्र के निर्धारण हेतु निम्नांकित प्रमुख आधार हो सकते है – प्रशासकीय स्तर पर – देश, राज्य, जिला, तहसील, विकासखण्ड, नगरपालिका आदि। सामाजिक – सांस्कृतिक स्तर पर – जाति, धर्म, शिक्षा। आर्थिक स्तर पर – श्रमिक, कृषक, उद्योगपति, भूस्वामी आदि। प्राकृतिक – भौगोलिक स्तर पर – पहाड़ मैदान, तटीय क्षेत्र आदि।

अध्ययन इकाई का निर्धारण

यह वह धुरी है जिसके चारो ओर प्रस्तावित अध्ययन केन्द्रित होता है। एक उत्तम अध्ययन इकाई में इन बातों का होना आवश्यक है – सरलता तथा स्पष्टता, स्थिरता तथा निश्चितता, एकरूपता तथा समानता, विशिष्टता तथा भ्रमहीनता, निर्धारण की योग्यता, विशुद्धता की क्षमता।

उपकल्पना का निर्माण

जब हम किसी आर्थिक अनुसंधान को आयोजित तथा क्रियान्वित करते है तो हमे केवल अध्ययन के विषय या समस्या का चयन कर लेना मात्र ही पर्याप्त नहीं होता है बल्कि उस समस्या को हल करने के लिए कोई न कोई पूर्व विचार या आधार भी ढूंढना पड़ता है। साथ ही प्रायः हमे यह भी जानने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि हम जिस आधार को लेकर अध्ययन के लिए आगे बढ़े थे और जो कुछ हम प्रमाणित करना चाहते थे, क्या वह सही सिद्ध हुआ अथवा, उक्त अध्ययन से निकाले गए सामान्यीकरणों से वह पूर्व विचार त्रुटि पूर्ण एवं अप्रमाणिक पाया गया।

अनुसंधान संबंधी अध्ययनों में उपकल्पना लेकर आगे बढ़ना आवश्यक माना जाता है। अध्ययन में संकलित तथ्यों के द्वारा निकलने वाले निष्कर्ष या तो वहीं सिद्ध करेगें कि हमारी उपकल्पना ठीक निकली और क्यो? अथवा यदि यह ज्ञात हो जाएगा कि यह उपकल्पना गलत रही तो इसके कौन–कौन से मुख्य कारण थे? उपकल्पना सच प्रमाणित हो या झूठ, दोनो ही अवस्थाओं में शोध कार्य ज्ञान की वृद्धि में सहायक होता है।

सूचना के स्त्रोत तथा अध्ययन के लिए उपयोगी पद्धतियों का निर्धारण

उपकल्पना सच है अथवा नहीं, इसके लिए तथ्यों का संकलन आवश्यक है। यह तथ्य स्वयं बोलते है कि क्या ठीक है और क्या गलत है उस बोली को शोधकर्ता खूब समझता है पर तथ्यों के संकलन के लिए उसे यह निश्चित करना होता है कि उसे किन स्त्रोतों से विश्वसनीय सूचनाएं या तथ्य प्राप्त हो सकते है और वे स्त्रोत उसकी पहुंच के भीतर है या नहीं। सूचना के स्त्रोतों के विषय में, सोच लेने के पश्चात् शोध विषय की प्रकृति के अनुसार उन पद्धतियों का भी चुनाव करना होता है जो कि शोध कार्य में उपयोगी होगा।

तथ्यों का निरीक्षण व संकलन

पद्धतियों व प्रविधियों का चुनाव हो जाने के पश्चात् वास्तविक शोध कार्य उस समय आरंभ होता है जबकि तथ्यों का निरीक्षण व संकलन का काम शुरू किया जाता है। निरीक्षण के साथ–साथ आलेखन (रिकार्डिंग) भी चलता रहता है। जिससे कि तथ्यों की प्रकृति अपरिवर्तित रहे।

वर्गीकरण

तथ्यों का संकलन कर लेने के पश्चात् उनको शोध कार्य के लिए वास्तव में उपयोगी बनाने के लिए निश्चित क्रमों तथा श्रेणियों में वर्गीकरण करना होता है। (वर्गीकरण विषय से सम्बद्ध अनेक अस्पष्ट पक्षो को स्पष्ट करता है) क्योंकि इसके द्वारा बिखरे हुए असम्बद्ध तथ्यों का ढेर न केवल कम हो जाता है अपितु निश्चित क्रमों से सज जाने के फलस्वरूप उनके एक वैज्ञानिक स्वरूप प्राप्त हो जाता है। तथ्यों का पारस्परिक संबंध भी वर्गीकरण के पश्चात् स्पष्ट हो जाता है।

निश्कर्शीकरण एवं नियमों का प्रतिपादन

इसी स्तर पर यह निश्चित रूप से मालूम हो जाता है कि उपकल्पना सही है अथवा गलत। कुछ भी हो पर उससे ज्ञान की वृद्धि व विज्ञान की समृद्धि संभव है।

शोध पत्र मानव समाज एवं भौगोलिक परिदृश्यों का वैज्ञानिक पद्धति से अध्ययन करके प्राप्त ज्ञान का उपयोग समाज के विकास की योजनाओं में करता है। शोध हमारी आर्थिक प्रणाली में लगभग सभी सरकारी नीतियों के लिए आधार प्रदान करता है। यह बौद्धिक संतुष्टि प्रदान करता है। यह एक बेहतर तरीके से क्षेत्र में नयी घटनाओं को समझने के लिए सक्षम बनाता है। शोध के माध्यम से शिक्षक और शोधार्थी वैकल्पिक नीतियों में चिन्तन करके प्रत्येक के परिणामों की जांच कर सकते है।

अनुसंधान किसी समस्या का वैज्ञानिक अन्वेषण है। शोध का मुख्य उद्देश्य वैज्ञानिक विधियों द्वारा विशिष्ट प्रश्नों का उत्तर अथवा विशिष्ट समस्याओं का समाधान प्राप्त करना है।

शोध पत्र के निष्कर्ष में मौलिक चिन्तन अनिवार्य है। शोध पत्र में विषय से संबंधित अद्यतन जानकारी होना आवश्यक है। मौलिकता के लिए अधिक से अधिक संदर्भ पुस्तकों का अध्ययन आवश्यक है। अपने विषय से संबंधित श्रेष्ठ समीक्षकों के आलेख अवश्य पढ़ना चाहिए।

शोध पत्र को लिखते समय शोध कर्ताओं को नवीन ज्ञान तथा शोधकार्य के संबंध में नवीन जानकारी प्राप्त होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Innovation – The Research Concept – 9 April 2017*
2. *शोध एवं पी.एच.डी. कैसे करें – सरोजनी कंसल*
3. *रिसर्च मैथ्डोलॉजी – वंदना वोहरा*
4. *शोध पद्धतियॉ – बी.एल. फाड़िया*